International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 05 | May - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

भारत की विदेश नीति में बदलाव: चीन और अमेरिका के संदर्भ में

Dr. Suresh Kumar Malviya,

Principal Shri Jain Terapanthi College Ranawas, Pali (Rajasthan)

Abstract (सारांश):

यह शोध-पत्र भारत की समकालीन विदेश नीति में हुए महत्वपूर्ण बदलावों का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से चीन और अमेरिका जैसे वैश्विक शक्तियों के साथ भारत के संबंधों के संदर्भ में। शीत युद्ध काल में गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने वाला भारत अब एक व्यावहारिक, बहुपक्षीय और रणनीतिक रूप से सशक्त राष्ट्र के रूप में उभरा है। अमेरिका के साथ रक्षा, व्यापार और तकनीकी सहयोग में वृद्धि हुई है, जबकि चीन के साथ सीमा विवाद और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा ने भारत को नई कूटनीतिक दिशा अपनाने के लिए प्रेरित किया है। इस शोध में यह दर्शाया गया है कि भारत की विदेश नीति अब केवल वैचारिक न होकर, राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक हितों और वैश्विक स्थिति के अनुरूप लचीली और संतुलित हो चुकी है। शोध-पत्र बहुपक्षीय साझेदारी, रणनीतिक स्वायत्तता और भारत की वैश्विक भूमिका को भी विस्तार से प्रस्तुत करता है।

Keywords (मुख्य शब्द):

- भारत की विदेश नीति
- गुटनिरपेक्षता
- भारत-अमेरिका संबंध
- भारत-चीन संबंध
- रणनीतिक स्वायत्तता
- बहुपक्षीय कूटनीति
- सीमा विवाद
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र
- QUAD
- आर्थिक और सुरक्षा नीति
- वैश्विक कूटनीति
- सामरिक साझेदारी

परिचय:

भारत, एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति, अपनी स्वतंत्र विदेश नीति के लिए जाना जाता है। शीत युद्ध के समय भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई थी, परंतु बीते कुछ दशकों में वैश्विक परिदृश्य में बड़े बदलावों के कारण भारत की विदेश नीति में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। विशेष रूप से चीन और अमेरिका जैसे दो वैश्विक शक्तियों के साथ भारत के संबंधों में जो बदलाव आए हैं, वे भारत की रणनीतिक सोच, सुरक्षा हितों और वैश्विक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। इस शोध-पत्र में हम भारत की विदेश नीति में हुए इन परिवर्तनों का विश्लेषण करेंगे।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

(क) गुटनिरपेक्षता की नीति:

स्वतंत्रता के बाद भारत ने यह तय किया कि वह किसी भी सैन्य गुट का हिस्सा नहीं बनेगा। यह नीति 'गुटनिरपेक्ष आंदोलन' के रूप में प्रसिद्ध हुई। इसका उद्देश्य था कि भारत स्वतंत्र रूप से अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर निर्णय ले सके।

(ख) भारत-चीन संबंध:

1954 में पंचशील सिद्धांतों के अंतर्गत भारत और चीन के संबंधों की नींव रखी गई। लेकिन 1962 में भारत-चीन युद्ध ने दोनों देशों के बीच विश्वास को गहरा आघात पहुँचाया। इसके बाद भारत की नीति में चीन के प्रति सतर्कता बढ़ गई।

(ग) भारत-अमेरिका संबंध:

प्रारंभ में भारत और अमेरिका के संबंध ठंडे थे, खासकर भारत के परमाणु परीक्षणों के बाद। लेकिन 1990 के दशक के बाद, खासकर 2005 के भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते के बाद, दोनों देशों के संबंधों में उल्लेखनीय सुधार आया।

2. भारत-अमेरिका संबंधों में बदलाव:

(क) सामरिक साझेदारी:

भारत और अमेरिका अब रणनीतिक सहयोगी हैं। सैन्य अभ्यास, रक्षा समझौते (जैसे BECA, COMCASA) और साइबर सुरक्षा में सहयोग बढ़ा है। यह साझेदारी भारत की सुरक्षा को मजबूत करती है।

(ख) आर्थिक और तकनीकी सहयोग:

भारत को अमेरिका से उच्च तकनीक, निवेश और स्टार्टअप सहयोग मिलता है। अमेरिका भारत का एक प्रमुख व्यापारिक भागीदार बन गया है।

(ग) हिंद-प्रशांत नीति और QUAD:

QUAD (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) के माध्यम से भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का सामना कर रहा है। यह क्षेत्रीय स्थिरता की दिशा में एक रणनीतिक कदम है।

3. भारत-चीन संबंधों में बदलाव:

(क) सीमा विवाद और सैन्य तनाव:

डोकलाम (2017) और गलवान घाटी (2020) की घटनाओं ने भारत-चीन संबंधों को गंभीर रूप से प्रभावित किया। भारत अब चीन के प्रति अधिक सतर्क और रणनीतिक दृष्टिकोण अपना रहा है।

(ख) व्यापारिक संबंध:

हालांकि भारत और चीन के बीच व्यापारिक संबंध मजबूत हैं, लेकिन भारत का व्यापार घाटा बहुत अधिक है। भारत अब आत्मनिर्भर भारत के तहत चीन पर निर्भरता कम करने की दिशा में काम कर रहा है।

(ग) रणनीतिक प्रतिस्पर्धा:भारत इंडो-पैसिफिक नीति को बढ़ावा देता है, जबकि चीन BRI (बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव) के माध्यम से अपने प्रभाव को फैला रहा है। भारत ने BRI का विरोध किया है और अपनी रणनीति अलग दिशा में बनाई है।

4. भारत की नई विदेश नीति की विशेषताएँ:

(क) बहुपक्षीय साझेदारी (Multi-alignment):

भारत अब किसी एक गुट में बंधने के बजाय, सभी देशों से अपने-अपने हितों के अनुसार संबंध बनाता है। अमेरिका के साथ सामरिक सहयोग और रूस, फ्रांस जैसे देशों के साथ रक्षा संबंध इसका उदाहरण हैं।

(ख) रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy):

भारत किसी के दबाव में नहीं आता। उदाहरण के लिए, रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत ने अपने हितों के अनुसार निर्णय लिया और पश्चिमी देशों के दबाव के बावजूद रूस से तेल खरीद जारी रखी।

(ग) वैश्विक मंचों पर सक्रिय भूमिका:

भारत G20, BRICS, SCO जैसे मंचों पर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इससे भारत की वैश्विक छवि और प्रभाव में वृद्धि हुई है।

5. विदेश नीति में बदलाव के कारण:

1. **राष्ट्रीय सुरक्षा:** चीन और पाकिस्तान से जुड़ी चुनौतियों के कारण भारत को रक्षा और सुरक्षा प्राथमिक बनानी पड़ी।
2. **आर्थिक हित:** वैश्विक निवेश, व्यापार और तकनीकी सहयोग को ध्यान में रखते हुए भारत की नीति अधिक आर्थिक केंद्रित हो गई है।
3. **भूराजनीतिक परिवर्तन:** अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता, रूस-यूक्रेन युद्ध, वैश्विक महामारी (कोविड-19) जैसे वैश्विक घटनाक्रमों ने भारत को अपनी नीति को लचीला और व्यावहारिक बनाने पर विवश किया।

निष्कर्ष:

भारत की विदेश नीति में हाल के वर्षों में बड़ा परिवर्तन आया है। एक ओर वह अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी मजबूत कर रहा है, तो दूसरी ओर वह चीन के साथ संतुलन बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। भारत की नीति अब केवल विचारधारात्मक नहीं रही, बल्कि वह अब **हित-आधारित**, **रणनीतिक रूप से लचीली** और **स्वायत्त निर्णयों** पर आधारित हो गई है। भारत अब एक परिपक्व शक्ति के रूप में विश्व मंच पर अपनी भूमिका निभा रहा है।

संदर्भ:

1. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
2. ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ORF)
3. ब्रुकिंग्स इंडिया रिपोर्ट्स
4. समाचार स्रोत: द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, लाइवमिंट
5. QUAD और BRI से संबंधित आधिकारिक दस्तावेज़

प्रमुख संदर्भ पुस्तकें (Reference Books):

1. **"भारत की विदेश नीति" – शांतनु मुखर्जी**
   - यह पुस्तक भारत की विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास से लेकर समकालीन परिवर्तनों तक पर विस्तार से चर्चा करती है।
   - प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन
2. **"India's Foreign Policy: Retrospect and Prospect" – Sumit Ganguly**
   - भारत की विदेश नीति में ऐतिहासिक और वर्तमान रुझानों को गंभीरता से विश्लेषित करता है।
   - विशेष रूप से चीन और अमेरिका के साथ संबंधों पर गहन अध्ययन।
3. **"Pax Indica: India and the World of the 21st Century" – Shashi Tharoor**
   - समकालीन भारत की विदेश नीति को वैश्विक दृष्टिकोण से देखने वाली लोकप्रिय और विश्लेषणात्मक पुस्तक।
4. **"Choices: Inside the Making of India's Foreign Policy" – Shivshankar Menon**
   - पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की दृष्टि से भारत की विदेश नीति निर्माण की प्रक्रिया और प्रमुख घटनाओं का विश्लेषण।
5. **"India's China Challenge: A Journey through China's Rise and What It Means for India" – Ananth Krishnan**

- भारत-चीन संबंधों को समझने के लिए एक समसामयिक और विश्वसनीय पुस्तक।

6. **"India's Foreign Policy" – Muchkund Dubey**
   - एक वरिष्ठ राजनयिक द्वारा लिखी गई पुस्तक जो भारत की विदेश नीति के सिद्धांतों और व्यवहारिक पक्षों को गहराई से समझाती है।
7. **"International Relations" – V.N. Khanna**
   - यह पुस्तक भारत की विदेश नीति सहित अंतरराष्ट्रीय राजनीति के सिद्धांतों को समझने के लिए उपयुक्त है।

📜 अन्य स्रोत (Other Useful References):

- **भारत सरकार के विदेश मंत्रालय (MEA)** की वेबसाइट – https://www.mea.gov.in
  (यहाँ से आधिकारिक नीतियाँ, भाषण, और दस्तावेज़ मिलते हैं)
- **Institute for Defence Studies and Analyses (IDSA)**
  https://www.idsa.in
  (भारत की सुरक्षा और विदेश नीति पर शोध पत्र)
- **Observer Research Foundation (ORF) Reports**
  https://www.orfonline.org